# Review by Doctor of Philosophy In History Research Scholer- Origin,Culture,Custom and Religion of Jat Since Aryas in Indian Ancient History - SU Rajasrhan

Virender Singh
09813872000

श्री K.C.Dahiya जी ने अपने ग्रंथ 'Jat Iran Sumer and Indus Civilization' के अन्दर जाटों की उत्पत्ति के आधार पर वर्तमान समाज पर बढ़ते जातिय दायरा अथवा जातिवाद को कम करने की चेष्टा की गई है तथा इस समुदाय की रीति-रिवाजों, धर्म-सम्प्रदाय व आदि उत्पत्ति पर प्रकाश डाला गया है, ताकि भविष्य में मददगार सिद्ध हो। जाट समुदाय के संवेहरा वर्ग अपनी प्रतिष्ठा, सम्यता व समुदाय की संस्कृति की रक्षार्थ भीषण संघर्ष करते आ रहे हैं। इस भटकते अंधकार युग में ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर अनेक ऐसी जानकारियॉ प्राप्त की हैं जो वर्तमान जातीय दृष्टि औझल रही हैं । इतिहास सदैव से भूतकाल का दर्शन कराने वाला शास्त्र माना जाता है।वास्तव में किसी देश,समुदाय या मनुष्य के जीवन की अतीत की घटनाओं को इतिहास के रूप में देखा जाता है। चिरकालीन संघर्षों का परिचय जो समय-समय पर मानव विकास में होता आ रहा है वहीं तथ्य इतिहास का बोध कराते हैं।जिसके कारण जनसाधारण तक इतिहास के महत्व को प्रकाशित किया जाना अनिवार्य हो गया।विशेषकर जाट समुदाय की उत्पत्ति, आदिकरण, सम्यता, सम्प्रदाय, धर्म व रीति-रिवाजों को मध्यकाल तक सामंतवादी दृष्टिकोण ने उपेक्षित रखा, लेकिन वर्तमान प्रजातान्त्रिक युग है। उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। हालांकि अनेक इतिहास मनोषियों द्वारा इस ओर अपने कदम बढ़ाए गए तथा अपनी अथक परिश्रम से जाट समुदाय के शौर्य और शूरवीरता को अपने-अपने ढंग से खोजपूर्ण तथ्यों के आधार पर आत्मचिंतन करके लेखनीबद्ध किया है।

अर्गेज इतिहासकारों के द्वारा आर्य को जाति माना गया है, जबकि वैदिक परम्परा के अनुसार आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है। जो व्यक्ति या व्यक्ति समूह अच्छे आचारशविचार वाला होता था वही आर्य था। आर्य दस्यु अथवा देव और असुर एक वंश के थे। विदशी इतिहाकारों ने आर्यत्व का आधार सदाचार न मानकर वर्ण रगं को माना है। इसी से आर्य अनार्यों के विषय में विवाद फैला है। उनकी लोकतांत्रिक जनवादी परम्परा भी उन्हें आर्य ही सिद्ध करतरी है। जाट विशिष्ट वंश न होकर एक प्रकार से प्रजातात्रिक शक्तियो का संघ ही है।आर्यों के उद्गम संबंधी विवाद कितना ही जटिल क्यों न हो, वह भारत के इतिहास का केवल एक पक्ष है जिस पर इतिहासकार एवं पुरातत्व विद्वान ताजी और नई अंतरदृष्टि डाल सकते हैं और उसको भारतीय सभ्यता की विशाल गतिशीलता से समावेशित करे रहे हैं।

*वास्तव में दहिया जी बधाई के पात्र हैं। आशा हैं कि वे इसी तरह के शोध ग्रंथ समाज को भेंट करे जो विभिन्न धर्म व जातियों के लोगों को सदभ्भावना के साथ एकसहमत रहने के लिए प्रेरित करेंगे।*

Virender Singh
V.P.O Palri, Distt-Panipat
132145